योगदा सत्संग मठ में ईश्वर-अर्जुन संवाद का विमोचन, राष्ट्रपति ने कहा

अध्यात्म भारत की आत्मा व दुनिया को महत्वपूर्ण देन है

परमहंस योगानंद का जीवन हमें सच्चाई से परिस्थितियों का सामना करना सिखाता है : स्मरणानंद जी

पुस्तक का विमोचन राष्ट्रपति ने किया.

योगदा आश्रम में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद लोग.

ये थे उपस्थित : राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू, मुख्यमंत्री रघुवर दास, पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा, मंत्री सीपी सिंह, मेयर आशा लकड़ा, सांसद रामटहल चौधरी, रवींद्र राय, पूर्व सांसद सुबोधकांत सहाय, मुख्य सचिव राजबाला वर्मा, विकास आयुक्त अमित खरे, कार्मिक सचिव निधि खरे, मनरेगा आयुक्त सिद्धार्थ त्रिपाठी तथा शरद संगम में आये देश-विदेश के फॉलोअर्स.

वरीय संवाददाता ▷ रांची

योगदा सत्संग सोसाइटी ने दुनिया भर में योग विज्ञान का प्रचार-प्रसार किया है. दरअसल, अध्यात्म भारत की आत्मा है, जो भारत की ओर से पूरी दुनिया को महत्वपूर्ण देन है. पहले विवेकानंद व फिर परमहंस योगानंद जी ने अध्यात्म का यह मार्ग प्रशस्त किया था. सोसाइटी से जुड़े लोग, जो सेल्फ रियलाइजेशन (आत्म साक्षात्कार) व मेडिटेशन (ध्यान) के रास्ते पर चल रहे हैं, उन्हें मेरी शुभकामनाएं. ये बातें राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कही. वह बुधवार को योगदा सत्संग सोसाइटी में ईश्वर-अर्जुन संवाद का विमोचन कर लोगों को संबोधित कर रहे थे.

उन्होंने कहा कि गीता का यह प्रकाशन समयानुकूल है व उपयोगी भी. इस किताब का मर्म मनुष्य के अंदरूनी झंझावत का हर युद्ध लड़ता है. आदमी ऐसी लड़ाई अपने विवेक से नहीं अध्यात्म से ही जीत सकता है. योगानंद जी ने 1918 से 1920 तक रांची के इसी आश्रम को अपनी कर्म स्थली बनाया था. इसके बाद वह अगले 32 वर्षों तक अमेरिका में क्रिया योग का प्रचार-प्रसार करते रहे. बाद में 1935 में वह फिर रांची आये थे. गांधीजी भी 1925 में आश्रम आये थे. राष्ट्रपति ने कहा कि धर्म जहां रुक जाता है, अध्यात्म वहीं से शुरू होता है. अपने संबोधन के क्रम में राष्ट्रपति ने परमहंस की आत्मकथा ऑटोबायोग्राफी ऑफ योगी की भी चर्चा की और कहा कि यह आत्मकथा हमें जीवन जीने की कला सिखाती है. मैंने भी यह किताब पढ़ी है. सोसाइटी के अध्यक्ष चिदानंद जी ने कहा कि ईश्वर-अर्जुन संवाद भारत सहित दुनिया को एक उपहार है. यह गीता के ज्ञान की वैज्ञानिक व्याख्या है. परमहंस ने भारत के राज योग विज्ञान का दुनिया भर खास कर पश्चिम में प्रचार-प्रसार किया. इसलिए पश्चिमी देशों में इन्हें फादर ऑफ योगा कहा जाता है. भारत सचमुच दुनिया भर के लिए आध्यात्मिकता का केंद्र है. मैं खुद इसका सबसे बड़ा लाभुक हूं. मेरा जन्म पश्चिम में जरूर हुआ, पर मेरी धरती भारत है. मेरा मानना है कि आध्यात्मिकता हर आत्मा को जोड़ती है, तोड़ती नहीं. यह मानव के बेहतर विकास व इसके अस्तित्व के लिए जरूरी है.

इससे पहले सोसाइटी के महासचिव स्मरणानंद जी ने कहा कि हर आदमी अपने जीवन में निरंतर आनंद, खुशी, विशुद्ध प्यार व सुरक्षा का भाव चाहता है. कौन नहीं चाहता कि यह सब समय, उम्र व मृत्यु से न बंधा हो. हम सभी अपने जीवन में संपूर्णता (परफेक्शन) चाहते हैं. पर क्या ऐसा होता है? दरअसल, हम विपरित परिस्थितियों में पलायनवादी रुख अपनाते हैं. पर परमहंस योगानंद का जीवन व शिक्षा यह संदेश नहीं देती. यह सच्चाई से परिस्थितियों का सामना करना सिखाती है. ईश्वर-अर्जुन संवाद हमें आश्वस्त करता है कि जिस ईश्वर ने अर्जुन से संवाद किया, वह आपसे भी बात करेंगे. यह संवाद हमारे अंदरूनी व बाहरी जीवन में शांति व आनंद कैसे हो, इसका मार्ग दिखाता है.

ईश्वर-अर्जुन संवाद के बारे में

ईश्वर-अर्जुन संवाद योगदा सत्संग सोसाइटी के संस्थापक परमहंस योगानंद जी द्वारा मूल रूप से अंगरेजी में लिखे गॉड (कृष्ण) टॉक्स विद अर्जुन का हिंदी अनुवाद है. गीता की नवीनतम, आधुनिक व वैज्ञानिक व्याख्या. अंगरेजी में यह किताब सबसे पहले 1995 में प्रकाशित हुई थी. इसके बाद जर्मन व फ्रेंच सहित अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ. हिंदी में इसका अनुवाद कई वर्षों की मेहनत का परिणाम है, जिसे सोसाइटी के स्वामी नित्यानंद जी के नेतृत्व में एक संपादकीय टीम ने अंजाम दिया है. दो खंड में इस किताब की कीमत 545 रु है.

-> 16.11.2017
(PRABHAT_KHABAR)